उषा भटनागर

नाम

हाँ, सच में वह लम्बा है
सबसे ऊंचा
भीड़ में अलग-थलग दिखता
यूकिलिप्टस के पेड़ जैसा
तना, सीधा खड़ा
झूमता - सा
अपनी गहरी काली आँखो से
चारों ओर दखता
पुरजोर आवाज़ लगाता
"हरी ताजी भिन्डी लो
लाल लाल टिमाटर
उजली सफेद गोभी लोह्न
और सच में वे तरोताजी-सब्जियाँ
लगती इतनी तर-इतरी ताज़ी
जैसे अभी उठी हां अंगड़ाई लेकर
नहाई हों सुबह की ओस में
पुलक कर भीगी हों
और चुन कर सीधी आ बैठी हों
उसके ठेले पर
पर जानती हूँ वह ओस नहीं
उसके मजबूत हाथों से
दिए गए पानी के छींटे हैं
पर बूँदो से दमकतीं
हरियाली चमक से

लकदक
दूरतक फैले खेतों की वे मुझे
याद दिला दे जाती हैं कितनी!
और बेजरूरत भी मैं चुनती जाती हूँ
लेती जाती हूँ
ढेर सी चीजें
जो उठाये नहीं उठतीं
“आप रहने दें
थैला धर पहुंचवा दूंगा,
वह कहता है हँस कर
मेरा घर पता है तुम्हें? ”
“हाँ, मैं आपको जानता हूँ, घर भी
हर बार की ग्राहक जो ठहरीं॥
पर तुम्हारा क्या नाम है भला
वह मुस्काराया, बोला
“लम्बू ! ”
और जोरों की हांक लगाई
“सब्जी ले लो
ताजी ताजी हरी हरी ”
हरदम की तरह जुटने लगी भीड़
और मेरा सवाल
गुम हो गया उस शोर में !!
दूसरी बार जाने पर
उठाने से पहले सब्जी
मैंने फिर इसरार किया
“लम्बू तो नाप है

परिचय नहीं
नाम तो बताओं । ”
“नाप ही सही पहचान है
अभी नाम बताते ही
मैं हिन्दू बन जाऊंगा
और शायद आने में ग्राहक
ठिठकेंगे ।
या फिर किसी दिन आकर दंगाई
लूट ले जाएंगे मेरी दुकान ।
इसी से मैंने
दाढ़ी मुड़वा ली है
जनेऊ फैंक दिया है
मुझे पेट पालना है
दूर गांव में बैठे
बच्चों की रोटी जुटानी है
स्कूलों की फीस भरनी है
कर्ज उतारना है बाप
आप सब्जी लो,
पकाओ,
खाओ,
जो हर इन्सार की भूख मिटाती है ।
पर दंगे में पहली शिकार
भरी हुयी दुकान ही बन जाती है ।
इन नामों से क्या लेना देना
जो आदमी को बांट दें,
बनते बनते को बिगाड़ दे

मै लम्बू ही भला !
वह फिर से हांक लगाने लगा
और मैं,
चुपचाप सब्जी चुनती
उस बेपढ़े के यथार्थ के आगे
नतमस्तक होती गयी।